शास्त्रीय संगीत में कितने राग हैं?

एस. श्रीनिवासन 'चीनू'

जब मैं छोटा था, उस समय शास्त्रीय संगीत का थोड़ा-बहुत ज्ञान होना अच्छी बात मानी जाती थी। मेरे संदर्भ में बात दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत की है। यह सुसंस्कृत होने का प्रतीक माना जाता था कि आप यह बता सकें कि कौन-सा राग गाया-बजाया जा रहा है। राग जितना दुर्लभ हो, आप उतनी ही ज़्यादा प्रशंसा के हकदार होते थे। ज़ाहिर है, मैं ऐसा कुछ नहीं कर पाता था हालांकि मैं यह देखकर बहुत प्रभावित होता था कि 10 साल से छोटे बच्चे न सिर्फ राग के नाम बता सकते थे, बल्कि मौका पड़ने पर गा भी सकते थे। आज भी टी.वी. चैनलों पर प्रतियोगिताएं देखता हूं तो प्रभावित हुए बगैर नहीं रहता।

काफी बाद में, हिंदुस्तानी शास्त्रीय वाद्य संगीत में थोड़े प्रशिक्षण के बाद, मैं कोई 20 राग पहचानने लगा था। मेरे गुरू ने मुझे तसल्ली दी थी कि उस्ताद लोग भी 20 से ज़्यादा रागों के जानकार नहीं होते। हां, सुनकर वे कहीं ज़्यादा राग पहचान सकते हैं। मगर अच्छा प्रशिक्षण पाने के बाद भी संगीतकार लोग बमुश्किल 100-200 राग पहचान पाएंगे। यह जानकर मुझे थोड़ा सुकून मिला, कि मेरी हालत बहुत बुरी नहीं है। वैसे मेरे गुरू ने यह भी स्पष्ट किया था कि राग को जानना और उसे पहचानना दो अलग-अलग बातें हैं।

मैं हिंदुस्तानी संगीत के बारे में जो कुछ थोड़ा-बहुत जानता हूं, वह अपने गुरू इंदौर घराना के श्री कमलभाई बड़ौदिया की बदौलत जानता हूं। मगर लेख में किसी भी त्रुटि के लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूं।

मगर इस सबमें से सवाल यह पैदा होता है कि वास्तव में कुल कितने राग हैं? यह जानने के लिए पहले आपको यह समझना होगा कि राग क्या होता है। और थोड़ा गणित भी करना होगा।

राग क्या है?

हम सबने सरगम के बारे में सुना हैः सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां (अगला सप्तक)। इनके पूरे नाम हैंः षड़ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। तो षड़ज से लेकर निषाद तक सात सुर (स्वर) हैं और हममें से ज़्यादातर लोग यही मानते हैं कि सुर सात होते हैं। मोटे तौर पर यह सही भी है मगर आंशिक रूप से ही सही है। इनमें से पांच शुद्ध सुरों के विकृत सुर भी होते हैंः रे, ग, म′, ध, और नि। सा और प को अचल सुर कहते हैं; इनके विकृत स्वरूप नहीं होते। जब सुर के संकेत के नीचे रेखा खींची हो, तो वह उसी सुर का कोमल रूप है और सुर के संकेत के बाद एक डैश हो तो वह उसका तीव्र रूप है। (वास्तव में तो एक सप्तक में 22 सूक्ष्म स्वर या श्रुतियां होती हैं और कुछ लोग बताते हैं कि इनकी संख्या 66 है, मगर हम फिलहाल उनकी बात नहीं करेंगे।)

तो सुरों की पूरी सूची निम्नानुसार बनेगीः सा, रे (कोमल), रे (शुद्ध), ग (कोमल), ग (शुद्ध), म (शुद्ध), म′ (तीव्र), प, ध (कोमल), ध (शुद्ध), नि (कोमल), नि (शुद्ध)। ये कुल मिलाकर 12 सुर हैं और भातखंडे के मुताबिक इन्हें निम्नानुसार लिखा जाता हैः

सा, रे, रे, ग, ग, म, म′, प, ध, ध, नि, नि, सां

यदि इसे मध्य सप्तक के सुर मानें तो इससे पहले वाले सप्तक (मंद्र सप्तक) के सुरों के नीचे एक बिंदु लगाया जाता है और इससे ऊपर वाले सप्तक (तार सप्तक) के सुरों के ऊपर एक बिंदु लगाया जाता है।

रागों के नियम

किसी भी राग के आरोह या अवरोह में अधिकतम सात

सुर हो सकते हैं और न्यूनतम पांच। इसके अलावा सा को पवित्र सुर माना गया है और इसे किसी भी राग में छोड़ा नहीं जा सकता। फिर यह भी नियम है कि म और प में से कोई एक होना ही चाहिए। एक नियम यह भी है कि किसी भी सुर के शुद्ध और विकृत दोनों रूप एक ही राग में नहीं हो सकते। जब सुरों को सीधे क्रम में यानी बढ़ते क्रम में गाया-बजाया जाता है तो उसे आरोह कहते हैं, तथा इससे उल्टे क्रम को अवरोह कहते हैं।

हर राग का एक प्रमुख सुर होता है जिसे वादी स्वर कहते हैं। गाते-बजाते समय इस सुर को बार-बार स्पर्श किया जाता है या दूसरे शब्दों में, लौट-लौटकर इस सुर को गाते-बजाते हैं। इसके अलावा इससे सम्बंधित एक और सुर होता है जो प्रमुखता में इसके बाद आता है। इसे सम्वादी स्वर कहते हैं। हर राग में एक चीज़ होती है जिसे पकड़ कहते हैं। यह कुछ सुरों का एक क्रम होता है जिसे बार-बार बजाया जाता है।

आरोह और अवरोह में सुरों की विभिन्न संख्याओं के आधार पर राग कई तरह के हो सकते हैं (तालिका 1)।

आप वैसे ही गणित की मदद से बता सकते थे कि जब आरोह और अवरोह में मात्र 3-3 संभावनाएं हैं तो कुल संभावनाएं 9 हैं। मगर किसी राग के आरोह और अवरोह में सुरों की संख्या तय होने से राग की खूबी प्रकट नहीं होती। राग की पहचान तो इस बात से होती है कि किसी राग में सुरों का कौन-सा समूह उपस्थित है। इस बात को समझने से पहले यह जानना आवश्यक है कि कोई राग किस थाट का है।

तालिका 1: रागों के प्रकार

क्र	राग का प्रकार	आरोह	अवरोह
1	संपूर्ण-संपूर्ण 7-7	7	7
2	संपूर्ण-षाड़व 7-6	7	6
3	संपूर्ण-औढ़व 7-5	7	5
4	षाड़व-संपूर्ण 6-7	6	7
5	षाड़व-षाड़व 6-6	6	6
6	षाड़व-औढ़व 6-5	6	5
7	औढ़व-संपूर्ण 5-7	5	7
8	औढ़व-षाड़व 5-6	5	6
9	औढ़व-औढ़व 5-5	5	5

थाट क्या है?

हमने देखा कि किसी भी राग में 12 में से 7 से अधिक सुर नहीं हो सकते। तो अब इन्हें चुनना एक समस्या है। सवाल है कि 12 में से अधिकतम सात चुनना हो, तो कितने तरीके से चुने जा सकते हैं। शर्त यह है कि आपको सा से शुरू करना होगा और उसके अगले सप्तक के सां के साथ समापन करना होगा। यह भी नियम है कि एक ही सुर के शुद्ध और विकृत दोनों रूप नहीं चुने जा सकते। मतलब ऐसा नहीं हो सकता कि मैं ग कोमल और ग शुद्ध दोनों को ले लूं या म शुद्ध और म′ तीव्र दोनों को ले लूं। जिन-जिन अलग तरीकों से मैं 12 में से 7 का चुनाव कर सकता हूं वे एक-एक थाट हैं। इसे हम एक-एक सुरमाला भी कह सकते हैं।

वास्तव में यह गणित का एक सवाल है जिसे कॉम्बिनेशन कहते हैं। यह विषय हाई स्कूल में पढ़ाया जाता है। मगर यहां हम इसी गणना को करने का थोड़ा सरल तरीका उपयोग करेंगे।

इसके लिए हम सप्तक के 12 सुर लेंगे और फिलहाल के लिए तीव्र म′ को छोड़ देंगे। इसकी बजाय अगले सप्तक (तार सप्तक) का सां जोड़ लेंगे। तो हमारे पास 12 सुर ही हैं। इन 12 सुरों को हम दो भागों में बांट लेते हैं: पूर्वांग और उत्तरांग, जैसा कि तालिका 2 में बताया गया है। अब एक पूर्वांग को लीजिए और उसे एक उत्तरांग के पहले रख दीजिए। यह हो गया एक थाट। जैसे पूर्वांग (1) को लीजिए और उसे उत्तरांग (1) के पहले रखिए। इससे सुरों का क्रम मिलेगाः सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां। इसे हम 1+1 कहेंगे। यह एक थाट है।

इसी प्रकार से हम 1+2, 1+3, 1+4 थाट बना सकते हैं। यानी पहले स्तंभ के 1 को दूसरे स्तंभ के 1 से 4 तक जोड़कर 4 थाट बने। इस प्रकार से पहले स्तंभ के 2, 3, व 4 को दूसरे स्तंभ के विभिन्न सुर क्रमों से जोड़कर 12 थाट और बनेंगे। कुल हुए 16 थाट। आपको याद होगा कि हमने म′ (म तीव्र) को छोड़ दिया था। अब हम म शुद्ध की जगह म′ को लेकर एक बार उपरोक्त

प्रक्रिया दोहराएंगे तो हमें 16 थाट और मिलेंगे। यानी कुल थाट हुए 32। इसका मतलब है कि सा से शुरू करके सां पर समाप्त करते हुए सात सुर चुनने के कुल 32 विकल्प मौजूद हैं।

यह सौभाग्य की बात है कि भातखंडे जैसे विशेषज्ञों ने प्रचलित रागों का गहन अध्ययन करके इन 32 थाटों में से मात्र 10 को चुना है और पर्याप्त बताया है। विष्णु दिगंबर पलुस्कर जैसे विशेषज्ञों ने12 को चुना है। अलबत्ता हिंदुस्तानी संगीत के अधिकांश विचार-विमर्श में भातखंडे द्वारा वर्णित 10 थाटों की ही बात होती है। तालिका 3 में इनके नाम व सुर संयोजन दिए गए हैं।

ये 10 थाट एक तरह से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कुल हैं, जिनमें विभिन्न राग वर्गीकृत हैं। हरेक थाट से जान-पहचान हो जाने के बाद आप कोई राग सुनकर यह पहचान सकेंगे कि वह कौन-से थाट का है। मगर अपने मूल सवाल पर लौटें कि राग कितने हैं।

सवाल को थोड़ा अलग ढंग से भी पूछा जा सकता हैः प्रत्येक थाट में कितने राग संभव हैं? यह दिखाया जा सकता है कि हरेक थाट में अधिकतम 484 रागों का समावेश हो सकता है। अतः कुल 10 थाटों में 4840 राग हो सकते हैं। यदि आप 32 थाट मानते हैं तो रागों की अधिकतम संख्या 15,488 यानी करीब 16,000 हो सकती है। दक्षिण भारतीय संगीत में 72 थाट हैं, इसलिए रागों की कुल संख्या 72x484 यानी करीब 35,000 हो जाएगी।

तालिका 2: सुरों के समूह

पूर्वांग	उत्तरांग
सा, रे, ग, म	प, ध, नि, सां
सा, रे, ग, म	प, ध, नि, सां
सा, रे, ग, म	प, ध, नि, सां
सा, रे, ग, म	प, ध, नि, सां

यह तो जानी-मानी बात है कि हर नियम का अपवाद होता है। तो, ऐसे राग मौजूद हैं जिनमें कुल चार ही सुर हैं और वहीं भैरवी राग में समस्त 12 सुरों का उपयोग होता है। पीलू में भी समस्त 12 सुरों का उपयोग होता है। सामवेद में श्लोकों के उच्चारण हेतु मात्र 3 सुरों की अनुशंसा की गई हैः मंद्र सप्तक के कोमल नि के साथ मध्य सप्तक के सा और रे कोमल।

इसके अलावा खास तौर से हिंदुस्तानी संगीत के बारे में एक और बात ध्यान में रखने की है कि यदि वादी और सम्वादी सुर बदल दिए जाएं तो राग का नाम बदल जाता है और वह सुनाई भी काफी अलग पड़ता है। जैसे जौनपुरी, असावरी और दरबारी कानड़ा। इनमें सिर्फ उन सुरों को बदला गया है जिन पर ज़ोर दिया जाएगा। इस बात से भी फर्क पड़ता है कि वही सुर सीधे गाए-बजाए जा रहे हैं या मींड के साथ या वक्र रूप में जैसे कि राग बेहाग में - प, म′, प, ग, म, ग। इसी प्रकार से सुरों का एक ही समूह जब अलग-अलग सप्तक में गाया-बजाया जाता है, तो बहुत अलग-अलग सुनाई पड़ता है। जैसे सोहनी (आम तौर पर तार सप्तक में ज़्यादा गाया जाता है), मारवा (मध्य सप्तक) और पूरिया (मंद्र सप्तक)। ऐसे राग भी हैं जिनमें एक सुर के दोनों रूपों का उपयोग होता है। जैसे ललित, केदार, कामोद वगैरह।

ये सारी विविधताएं और अपवाद रागों की संख्या को और बढ़ा देंगे। भारतीय शास्त्रीय संगीत सचमुच अनंत है। यह एक सागर जैसा है। आप डुबकी लगाइए, आनंद लीजिए और आनंद बांटिए। इतने सारे कष्टों और नाखुशियों के बीच जीवन थोड़ा जीने के काबिल हो जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

तालिका 3: विभिन्न थाटों में सुर संयोजन

थाट का नाम	प्रयुक्त सुर	टिप्पणी
बिलावल	सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां	सारे सुर शुद्ध
कल्याण	सा, रे, ग, म′, प, ध, नि, सां	म′ तीव्र, शेष शुद्ध
खमाज	सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां	नि कोमल
मारवा	सा, रे, ग, म′, प, ध, नि, सां	रे कोमल, म′ तीव्र
भैरव	सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां	रे, ध कोमल
पूर्वी	सा, रे, ग, म′, प, ध, नि, सां	रे, ध कोमल, म′ तीव्र
काफी	सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां	ग, नि कोमल
असावरी	सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां	ग, ध, नि कोमल
भैरवी	सा, रे, ग, मा, प, ध, नि, सां	रे, ग, ध, नि कोमल
तोड़ी	सा, रे, ग, म′, प, ध, नि, सां	रे, ग, ध कोमल, म′ तीव्र